कक्षा : गयारहवीं , गद्य खंड

"लता मंगेशकर"

Dr. Nand Kishore Pandit

Asst. Prof. Hindi

APSM College, Barauni

सारांश

प्रस्तुत पाठ में लेखक कुमार गंधर्व ने सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर के अद्‌भुत गायकी पर प्रकाश डाला है| उन्होंने लता मंगेशकर के गायन के विशेषताओं को उजागर किया है| उनके अनुसार चित्रपट संगीत में लता जैसी अन्य गायिका नहीं हुई| उनसे पहले प्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ का चित्रपट संगीत में अपना जमाना था| लेकिन लता मंगेशकर उनसे भी आगे निकल गई| उन्होंने चित्रपट संगीत अत्यधिक लोकप्रिय बनाया| चित्रपट संगीत के कारण लोगों को स्वर के सुरीलेपन की समझ हो रही है| लता मंगेशकर का सामान्य मनुष्य में संगीत विषयक अभिरुचि पैदा करने में बहुत बड़ा योगदान है|

एक सामान्य श्रोता शास्त्रीय गान और लता के गान में से लता का गान ही पसंद करते हैं| इसका कारण है लता के गानों में गानपन का होना| गानपन का आशय है गाने की वह मिठास, जिसे सुनकर श्रोता मस्त हो जाए| लेखक के अनुसार उनके स्वर में निर्मलता उनके गानों की विशेषता है| जहाँ प्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ के गाने में एक मादक उत्तान दीखता था, वहीँ लता मंगेशकर के स्वरों में कोमलता और मुग्धता है| उनके गानों की एक और विशेषता है, उसका नादमय उच्चार| उनके गीत के किन्हीं दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा बड़ी सुंदर रीति से भरा रहता है| लेखक के अनुसार लता मंगेशकर ने करूण रस के गाने इतनी अच्छी तरह नहीं गाए हैं| उन्होंने मुग्ध श्रृंगार की अभिव्यक्ति करने वाले मध्य या द्रुतलय के गाने बड़ी उत्कटता से गाए हैं| लता का ऊँचे स्वर में गाना भी लेखक को उनके गायन की कमी लगती है| इसका दोष वह संगीत दिग्दर्शक को देते हैं जिन्होंने उनसे ऊँची पट्टी के गाने गवाए हैं|

चित्रपट संगीत गाने वाले को शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी होना आवश्यक है और यह लता मंगेशकर के पास निःसंशय है| शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत की तुलना नहीं की जा सकती है| शास्त्रीय संगीत की विशेषता उसकी गंभीरता है तथा चपलता चित्रपट संगीत का मुख्य गुणधर्म है| चित्रपट संगीत का ताल प्राथमिक अवस्था का ताल होता है, जबकि शास्त्रीय संगीत में ताल अपने परिष्कृत रूप में पाया जाता है| चित्रपट संगीत की विशेषता उसकी सुलभता और लोचता है| लता मंगेशकर का एक-एक गाना संपूर्ण कलाकृति होता है| उनके गानों में स्वर, लय और शब्दार्थ का त्रिवेणी संगम होता है| चाहे वह चित्रपट संगीत हो या शास्त्रीय संगीत, अंत में उसी का अधिक महत्त्व है जिसमें रसिक को आनंद

देने का सामर्थ्य अधिक है| गाने की सारी ताकत उसकी रंजकता पर मुख्यतः अवलंबित रहती है|

संगीत के क्षेत्र में लता मंगेशकर का स्थान अव्वल दर्जे के खानदानी गायक के समान है| खानदानी गवैयों का दावा है कि चित्रपट संगीत ने लोगों के कान बिगाड़ दिए हैं| लेकिन लेखक का मानना है कि चित्रपट संगीत के कारण लोगों को संगीत की अधिक समझ हो गई है| लेखक के अनुसार शास्त्रीय गायकों ने संगीत के क्षेत्र में अपनी हुकुमशाही स्थापित कर रखी है| उन्होंने शास्त्र-शुद्धता के कर्मकांड को आवश्यकता से अधिक महत्त्व दे रखा है| आज लोगों को शास्त्र-शुद्ध और नीरस गाना नहीं, बल्कि सुरीला और भावपूर्ण गाना चाहिए| चित्रपट संगीत के कारण यह संभव हो पाया है| इसमें नवनिर्मिति की बहुत गुंजाइश है| बड़े-बड़े संगीतकार लोकगीत, पहाड़ी गीत तथा खेती के विविध कामों का हिसाब लेने वाले कृषिगीतों का भी अच्छा प्रयोग कर रहे हैं| इस प्रकार चित्रपट संगीत दिनोंदिन अधिकाधिक विकसित होता जा रहा है और इस संगीत की अनभिषिक्त साम्राज्ञी लता मंगेशकर हैं |